आधुनिकता के दौर में हमने क्या खोया, क्या पाया ?

लुप्त होती रस्में

कोई पचास साठ बरसों पूर्व शादी ब्याह की धूमधाम महीनों पहले से शुरु हो जाती थी और मुख्य विवाह भी कम से कम तीन से पांच दिन तक चलता था। हर छोटी बड़ी रस्म पूरे उत्साह से पूरी की जाती थी परन्तु आज की व्यस्त जीवन चर्या का असर शादी ब्याह के उत्सवों पर भी पड़ा है। आज का विवाह पांच–छह घंटो में संपन्न हो जाते है जिसमें केवल मुख्य मुख्य रस्में ही पूरी हो पाती है इसीलिये अनेक विवाह रस्में लुप्त प्राय: होती जा रही है। पहले महीने भर पहले से घर में बन्ना बन्नी गीत के सुर गूंजने लगते थे।

मटियाने, बड़ी, पापड़ बनाने, डलिया बनाने आदि अनेक रस्में शुरु हो जाती थी। बन्ना बन्नी को हल्दी चढ़ते ही मित्रों रिश्तेदारों में उनका न्यौता शुरु हो जाता था और घर घर गोद भराई जाती थी। शादी में मनोरंजन का अपना ही स्थान था। अनेक रस्में हास्य और मनोरंजन से पूर्ण होती थी। बारात बिदा होते ही बन्ने के घर की महिलायें गौरइयां खेलती थी। इसी तरह बारातियों के मनोरंजन के लिये भी अनेक रस्में होती थी। समधीजी का विशेष सत्कार होता था और उनका पूरा स्त्री श्रृंगार कर उनके उपहार दिये जाते थे। बारातियों और समधियों के सिर पर पापड़ तोड़ना, पीठ पर हल्दी के थापे लगाना, गाली गीतों से उनका स्वागत करना, हास्य और मनोरंजन से भरपूर होता था। ब्याह के पश्चात दूल्हा दुल्हन के बीच परिचय प्रगाढ़ हो इसके लिये अनेक खेलपूर्ण रस्में भी कराई जाती थी। ससुराल में बहू की मुंह दिखाई, खिचड़ी परोसना, दादरे गीत आदि से बहू को नये वातावरण में घुलने मिलने में सहायक होते थे। बदलते समय में इनमें से कई रस्में भुला दी गयी है या इन्हें संक्षिप्त रुप में ही संपन्न करना मजबूरी बन गयी है।

– श्रीमती राजकुमारी जैन, ललितपुर

बर्बादी धन और भोजन की

आज के समय में शादी ब्याह अत्यंत शान शौकत और ग्लैमर की चकाचौंध से भरे होते है। इन सबसे अधिक विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र होता है स्वागत भोज। इसी से किसी विवाह को साधारण या शानदार आंका जाता है किन्तु वर्तमान में इसका स्वरुप अत्यंत खर्चीला और फिजूलखर्ची से दूषित होने लगा है इसका कारण स्वागत भोज में परोसे जाने वाले अनगिनत देशी और विदेशी पकवान है। सूप, सलाद, स्टार्टर, मेनकोर्स, डेजर्ट, मॉकटेल, आइस्क्रीम, कॉफी आदि के साथ ही अनेक क्षेत्रीय व्यंजनों के स्टॉल लगे होते हैं। उपरोक्त सभी स्टॉलों पर इतनी प्रकार के व्यंजन परोसे जाते है जिनमें हर व्यंजन को खाना किसी के लिये भी संभव नहीं होता। फलत: चखना और जूठा फेंकना ही हो पाता है अर्थात भोजन और धन दोनों की बर्बादी। जरा विचार करें जिस देश में लाखों लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिलता है वहां अन्न की ऐसी बर्बादी क्या हमें शोभा देती है? यदि हम इन भोज आयोजनों में एक निश्चित और सीमित व्यंजन परोसे तो सभी लोग उनका पूरा आनंद ले सकेंगे और जूठन छोड़ने पर भी अंकुश लगेगा। लेकिन यह किसी एक विवाह या एक व्यक्ति के बस का नहीं है। इसके लिये हमें पूरी समाज को एकजुट कर निर्णय लेना होगा और उसका पालन भी पूरी कठोरता से करना होगा। नियम का उल्लंघन करने वाले परिवार के लिए दण्ड भी सुनिश्चित किया जाये। इन्दौर नगर में कुछ समाज द्वारा निर्णय लिया गया कि विवाह समारोह में 21 भोज्य सामग्री मयपानी के ही परोसे जायेंगे अन्यथा समाज पदाधिकारी उस विवाह समारोह में शामिल नहीं होंगे। तभी हम इस आधुनिक युग की 'कुप्रथा' को रोक सकेंगे। इससे बचे हुए धन को समाज या परिवार के हित में उपयोग किया जा सकता है। साथ ही संपन्न और साधारण वर्ग के बीच की खाई को भी कुछ हद तक पाटा जा सकेगा। आइये देश और समाज के हित में एक साहसिक कदम उठायें।

– संपादक मंडल

शब्द जाल प्रतियोगिता - 7 (सभी उम्र- महिला/पुरुष/बच्चों के लिए)

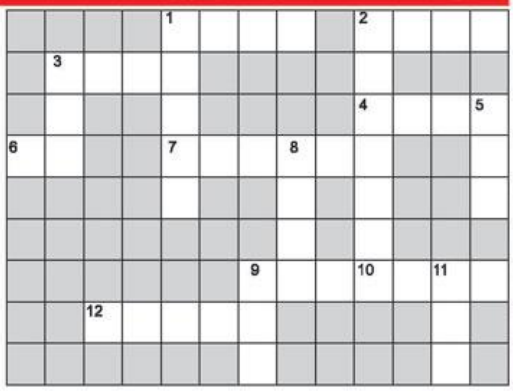

बायें से दायें –

(1) तीर्थंकर जिनका चिन्ह चन्द्रमा है। (4)
(2) इनके नाम पर स्टेच्यू आफ यूनिटी का निर्माण हो रहा है ..... पटेल। (4)
(3) ये समयसार ग्रंथ के रचयिता है। (4)
(4) एक महिला बॉक्सर जिनके नाम पर फिल्म बन चुकी है। (4)
(6) पंच परमेष्ठी वाचक सबसे छोटा मंत्र है। (2)
(7) बड़वानी (म.प्र.) जिले का एक तीर्थ है। (5)
(9) अरिहंत परमेष्ठी के अतिशय होते हैं (संख्या) (3)
(10) पार्श्वनाथ भगवान तीर्थंकर है। (संख्या) (3)
(12) महाराष्ट्र के नये मुख्यमंत्री है देवेन्द्र .... (5)

ऊपर से नीचे

(1) एक सती जो महावीर भगवान की मौसी थी। (5)
(2) आमिर खान का एक चर्चित टीवी शो है। (7)
(3) इससे मस्तक पर तिलक लगाते है। (3)
(5) नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाली पाकिस्तानी बालिका (3)
(8) सती मनोवती प्रतिदिन भगवान को चढ़ाती थी (4)
(9) ऋद्धियाँ होती है (संख्या) (3)
(11) नोबेल शांति पुरस्कार विजेता का नाम है कैलाश.... (3)

निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर** । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कृत किया जावेगा, आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। * **नियम – प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला, पुरुष एवं बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 15 जनवरी 2015 सही जवाब के साथ पर प्रतियोगी अपने अभिभावक का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी प्रतियोगी का नवीन फोटो अवश्य भेजें। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।**

* बधाईयाँ *

परम पूज्य मुनिश्री सुधासागरजी के ससंघ सानिध्य में अ.भा.दि. जैन विद्वत परिषद और श्री दि. जैन प्रभावना समिति कोटा के तत्वावधान पुण्यार्जकत्व में आचार्यश्री कुंद कुंद अध्यात्म राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी एवं विद्वत परिषद का अधिवेशन संपन्न हुआ। जिसमें दि. जैन विद्वत परिषद के तत्वावधान में श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के पुण्यार्जकत्व में क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद वर्णी पुरस्कार गंजबासौदा की **डॉ. आराधना जैन 'स्वतंत्र'** को दिया गया। पुरस्कार स्वरुप शाल, श्रीफल, मोती माला, प्रशस्ति पत्र के साथ 11 हजार रु. का धनादेश प्रदान कर सम्मानित किया गया। नगर के सभी संगठनों ने डॉ. आराधना जैन को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाईयां प्रदान कर सम्मानित किया गया। गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

सत्येन्द्र, राजेश, मुकेश, चक्रेश एवं शैलेन्द्रकुमार की माताजी **श्रीमती बेनीबाई जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचंदजी जैन सेमरावालों का स्वर्गवास 8.11.14 को हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के साथ ही अत्यंत सरल स्वाभावी एवं मिलनसार व्यक्तित्व थी। आपकी स्मृति में आपके परिवार ने गोलालारीय दर्शन को 2100/– सहयोग राशि प्रदान की।

गोलालारीय दर्शन परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

11 वर्षीय छात्र ने अस्पताल के कायाकल्प अभियान में दिया एक लाख रु. का सहयोग

इन्दौर, संजय जैन। संकल्प पवित्र हो और कुछ करने का जज़्बा हो तो हर राह आसान हो जाती है। विगत दिनों इन्दौर के श्री अग्रसेन विद्यालय के 11 वर्षीय छात्र मा. प्रणय संजय जैन ने लगातार 9 घंटे इलेक्ट्रीक ड्रम बजाकर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दावा प्रस्तुत कर इन्दौर का नाम रोशन करते हुए रिकार्ड बनाया। इस अवसर को यादगार बनाने हेतु मास्टर प्रणय ने सभी श्रोताओं से बधाई लेने के साथ गुजारिश की, कि आप नगर के एम.वाय. अस्पताल कायाकल्प अभियान हेतु सहयोग करें। अभिनव पहल और बाल मनुहार एवं सेवा भावाना के प्रति लोगों ने उत्साह दिखाया और देखते ही देखते 1 लाख रुपये एकत्र हो गये। अपनी खुशी को इजहार करते हुए मा. प्रणय ने कहा कि रिकार्ड बनने से ज्यादा खुशी मुझे इस नेक कार्य के लिए एकत्रित राशि से है। उन्होंने कहा कि ईश्वर प्रदत्त अपने इस हुनर का प्रदर्शन करते हुए आगे भविष्य में भी मैं स्वयं ऐसे नेक कार्य हेतु तत्पर रहूँगा। कार्यक्रम का आयोजन 24 ×7 फ्रेंड्स फाउण्डेशन द्वारा आयोजित किया गया। पत्रिका परिवार की ओर से बधाईयां।